an>

Title: Need to accord the status of religion to Lingayats - Laid.

श्री राजू शेट्टी (हातकणंगले): जैसा कि हम सभी को विदित है कि लिंगायत धर्म संस्थापक धर्म गुरू महात्मा बसवेश्वर जी एक महान दार्शनिक, समाज सुधारक व संत थे उन्हें विश्व गुरू व भक्ति भण्डारी भी कहा जाता है ।

12वीं शताब्दी के दौरान जब अंधविश्वास, अंधश्रद्धा, छुआछूत व साम्प्रदायिक उन्माद चरम पर था, आम जनता धर्म के नाम पर दिग्भ्रमित थी तथा धर्म के स्वच्छ निर्मल आकाश में ढोंग व पाखण्ड के बादल छाए हुए थे उसी समय में गुरू बसवेश्वर रूपी सूर्य का उदय भारतीय क्षितिज में हुआ । महात्मा बसवेश्वर आज भी भारतीय संस्कृति का वह हीरा है जिनकी चमक नित-नूतन और शाश्वत है ।

आज लगभग 800 वर्ष पश्चात कर्नाटक महाराष्ट्र के समीप्य क्षेत्रों में रहने वाले जनमानस के मस्तिष्क में गुरू बसवेश्वर बेहद प्रासंगिक है । यहाँ के लिंगायत धर्म के मानने वालों के मतानुसार लिंगायत एक धर्म है जाति नहीं और वे लोग लिंगायत समाज को सरकार से एक धर्म के रूप में मान्यता देने के लिए संघर्षरत हैं ।

मैं अत्यंत विनम्रतापूर्वक आग्रह करता हूँ कि जिस प्रकार जैन एवं बौद्ध समाज को पृथक धर्म के रूप में मान्यता प्रदान की गई उसी प्रकार लिंगायत समाज को भी एक धर्म के रूप में मान्यता प्रदान की जाए जिससे समानता, भाई-चारा, नैतिकता, समृद्धि और प्रगति के प्रतीक लिंगायत धर्मगुरू श्री बसवेश्वर जी को भी सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सके ।